© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

21वीं शताब्दी में गाँधीवाद की प्रासंगिकता

गजेन्द्र सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

मोहनदास करमचंद गांधी को दुनिया कथनी–करनी में समानता, सत्यनिष्ठ, अहिंसा के पुजारी, सर्वधर्म समभाव, समानता आधारित समाज के समर्थक, सामाजिक, आर्थिक न्याय के प्रवक्ता, रचनात्मक कार्यों के प्रणेता के रूप में जानती है। गांधीजी के इन उसूल एवं सिद्धांतों को आज के समय अपनाये जाने की आवश्यकता है तभी हम इस धरती को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

मुख्य शब्द :– सत्य, अहिंसा, पर्यावरण, औद्योगिकीकरण, ट्रस्टीशिप रचनात्मक कार्यक्रम, साम्प्रदायिक सद्भाव, सर्वोदय

प्रस्तावना

गांधीजी ने जो जीवन जिया वही गांधीवाद है, क्योंकि गांधीजी कहते थे कि मेरे कर्म ही उपदेश है। गांधीजी की कथनी–करनी में अंतर नहीं था। सत्य उनकी सांसों में रंगा था, वो लाभ व लोभ के लिए भी सत्य को त्यागने के पक्ष में नहीं थे। सत्य के अलावा अहिंसा उनका दूसरा अश्त्र था। अहिंसा के तीन प्रकार उन्होंने बताये साथ ही अहिंसा को वीरो के अस्त्र के रूप में संज्ञा देते थे।

गांधी जी वस्तुओं के अत्यधिक संग्रह व उपभोग को सीमित करने के पक्षधर थे। वे मानते थे कि अत्यावश्यक वस्तुएं ही अपने पास रखनी चाहिये तथा उपभोग भी कम से कम होना चाहिये। गांधीजी कुटीर उद्योगों के समर्थक थे एवं बड़े उद्योगों को मानवता के हितैषी नहीं मानते थे।

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत उनकी अपनी विशिष्ट योजना थी। वे चाहते थे कि उद्योगपति अपनी सम्पत्ति के स्वयं को मालिक न समझ कर सिर्फ संरक्षक अथवा ट्रस्टी समझे। वो पूंजीवाद को ट्रस्टीशिप के मूलम्मे में रंगना चाहते थे।

सामाजिक दृष्टिकोण में गांधीजी जातिवाद के विरोधी थे मगर वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे। वे छूआछूत, अस्पश्यता भेदभाव के सख्त विरोधी थे। गांधीजी सर्वधर्म सद्भाव में विश्वास रखते थे। साम्प्रदायिकता को देश, समाज, राष्ट्र के लिए घातक मानते थे। उनका पूरा जीवन साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रयास में व्यतित हुआ। स्त्रीयोद्धार के लिए उन्होंने महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष बर्ताव पर बल दिया। वे महिला शिक्षा के प्रबल समर्थकों में से रहे हैं।

राजनीतिक रूप में गांधीजी राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के समर्थक जबकि साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद के विरोधी रहे। उन्होंने अपना सारा जीवन देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति आन्दोलन में लगाया।

वर्तमान प्रासंगिकता

अभी तक हमने विभिन्न विषयों पर गांधीजी के दृष्टिकोण पर चर्चा की। अब सवाल उता है कि क्या आज गांधीजी के ये विचार समाजोपयोगी एवं प्रासंगिक है? इस सवाल का जवाब है कि आज 21वीं शदी में विश्व के समक्ष जो चुनौतिया है उनका समाधान करीब–करीब गांधीवाद में है अथवा गांधी दर्शन में है।

आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण एवं जलवायु परिवर्तन है। इस समस्या से सभी देश एवं सभी मानव, जीव जन्तु एवं वनस्पति भी पीड़ित है। यदि इस समस्या का समाधान हम गांधीजी में खोजने का प्रयास करे तो गांधीजी अपरिग्रह निषेध, उपभोग कम करने की सलाह, बड़े उद्योगों का विरोध, कुटिर उद्योगों का समर्थन, साधारण मकानों में रहना, प्रकृति के साथ–साथ तालमेल बिठाने, वृक्षारोपण के समर्थन जैसे कार्य बताते हैं। गांधीजी

के सुझाये उपर्युक्त कार्य करे तो पर्यावरण संकट समाप्त हो जायेगा। दूसरी बड़ी समस्या वर्तमान विश्व की आतंकवाद है इसका समाधान अहिंसा में है। अहंसा से बड़ी से बड़ी बात भी मनवायी जा सकती है यह वीरों का हथियार है।

आज विश्व के सभी देशों में असमानता बढ़ती जा रही है। यह असमानता राष्ट्रों में उत्तर–दक्षिण के रूप में जबकि एक ही राष्ट्र में अमीरी–गरीबी के रूप में बढ़ी है। दूनिया के 8 औद्योगिक राष्ट्र लगभग 85 प्रतिशत जीडीपी पर नियंत्रण रखते हैं वहीं देश के अंदर बात करे तो भारत में प्रमुख 15 उद्योगपति देश के 73 प्रतिशत जीडीपी पर नियंत्रण रखते है। इस असमानता के कारण आपसी संघर्ष बढ़ा है। गांधीजी के अपरिग्रह एवं विशाल औद्योगिकीकरण के स्थान पर कुटिर उद्योगों के समर्थन में इसका समाधान निहित है।

कुपोषण एवं भुखमरी आज वैश्विक समस्या है, गांधी जी व्यवसायिक फसलों के स्थान पर खाद्यान्न, दलहन, तिलहन उपजाये जाने के समर्थक थे जिससे कुपोषण, भुखमरी न हो।

आज विश्व नव–औपनिवेशिक शोषण का शिकाार है इसमें विकसित व शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर व गरीब देशों पर नीतियों के माध्यम से नियन्त्रण कर लेते हैं। गांधीजी किसी भी प्रकार के शोषण व नियन्त्रण के विरूद्ध थे, उनका स्वयं का जीवन साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद का विरोध करते व्यतीत हुआ।

सभ्यताओं का टकराव एक बड़ी समस्या के रूप में अभी निकल कर आया है। इस्लाम का यहूदी से टकराव, इस्लाम का ईसाइ से टकराव, हिन्दू का मुस्लिम से टकराव, बौद्धो का इस्लाम से टकराव आदि। गांधीजी सर्वधर्म

सद्भाव एवं साम्प्रदायिक एकता की बात करते थे। उनकी बातों को अपनाये जाने से इस विकट समस्या से विश्व को मुक्ति दिलाई जा सकती है।

सारांश

आज विश्व की जो भी समस्याएं है, चाहे वह छोटी है अथवा बड़ी, व्यापक है अथवा संकीर्ण, राजनीतिक है अथवा सामाजिक, परम्परागत है अथवा टेक्नोलॉजी से सम्बन्धित, आधुनिक, प्रकृति से जुड़ी हो अथवा मानवता से, सभी का समाधान गांधीवाद एवं गांधी दर्शन में है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिगृह, सर्वोदय, सर्वधर्म सद्भाव, कुटिर उद्योग खादी, मानवता प्रेम, बुनियादी शिक्षा इनमें उन समस्याओं का समाधान निहित है।

संदर्भ

1. महापात्र अनिल कुमार, 'वर्ल्ड फोकस, मई 2014, पृ. 19
2. सिंह मधुलिका, 'वर्ल्ड फोकस', मई 2014, पृ. 50
3. गाबा ओ.पी., 'भारतीय राजनीतिक विचारक', मयुर पेपर बैक्स, 2008, पृ. 192
4. यंत्र इण्डिया, 4.10.1930
5. दाधीच नरेश, 'महात्मा गांधी का चिंतन', रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2014
6. शर्मा रितु प्रिया, 'गांधी और मानवाधिकार', ज्योति प्रकाशन, जयपुर 2008
7. गांधी महात्मा, 'हिन्द स्वराज', नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
8. फिशर लुई, 'गांधी की कहानी', सस्ता साहित्य प्रकाशन।